REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

" छिन्दवाड़ा जिले के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालय के कला एंव विज्ञान के विद्यार्थियों की शाब्दिक सर्जनात्मकता का अध्ययन "

राजीव कुमार राठौर
शोधार्थी, सतत् शिक्षा एवं विस्तार विभाग,
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल (म०प्र०)

प्रस्तावना एवं शोध सारांश :–

संबंधित साहित्य के गठन अध्ययन के पश्चात् अनुसंधानकर्त्ता का अगला चरण होता है कि वह अपने अनुसंधान कार्य हेतु एवं उपयुक्त कार्य हेतु उपयुक्त एवं सही अनुसंधान कार्य हेतु एवं उपयुक्त कार्य हेतु उपयुक्त एवं सही अनुसंधान उपागम का चयन करे क्योकि इस अुनंसधान उपागम के आधार पर ही हम अपने अनुसंधान संबंधी प्रदत्तों का संकलन का वास्तविक कार्य निर्धारण कर सकते है।

अनुसंधान किसी नयी चीज की खोज करना है। वस्तुतः यह सत्य नही है कि नयी वस्तु की खोज करना मात्र ही अनुसंधान नही है अनुसंधान इस प्रक्रिया को इंगित करता है कि जिसके द्वारा अनेक प्रकार के तथ्यों का संकलन किया जाता है। और उनके विश्लेषण, जाँच, गहन निरीक्षण द्वारा व्यापक निषकर्ष निकाले जाते है। अनुसंधान में प्रश्न करना, निरीक्षण योजनाबद्ध अध्ययन व्यापक परीक्षण और तत्परतायुक्त सोद्देश्य सामान्यीकरण करने की प्रक्रियाएँ सन्निहित होती है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समस्या का विशिष्टकरण अनिवार्य होता है। अतः अनुसंधान किसी क्षेत्र विशेष की समस्या का सर्वागिण विश्लेषण है।

अनुसंधान ऐसा व्यस्थित विश्वसनीय एवं नियंत्रित अध्ययन है। जिसमें विभिन्न चरों एवं विभिन्न घटनाओं के पारस्परिक संबंध का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकी विधि द्वारा किया जाता है। जो संबंधों अथवा प्रभाव को एक दिशा प्रदान करता है, ये दिशा शिक्षा के क्षेत्र में समस्याओं के अध्ययन करने एवं उसमें आपेक्षित परिवर्तनीय सुधार करने में मदद करता है। यदि अनुसंधान में विश्वसनीयता एवं वैधता का अभाव रखा जाये तो ऐसी दशा में प्राप्त निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में ठोस निर्णय नही प्रदान कर पायेगा, इसलिये अनुसंधानों में वैज्ञानिक विधि का अधिक महत्व हो जाता है। वैज्ञानिक विधि से तात्पर्य यह है कि जिन परीक्षणों के आधार पर हमें आँकडे प्राप्त करने होते है यदि वे वैज्ञानिकता एवं विश्वसनीय रखते है तो आँकडे सही निष्कर्ष लेने में सहायक होगे और जिनके परीक्षणों में वैधता उपस्थित रहगी।

शोध कार्य के लिए प्रविधि का विशेष महत्व होता है। प्रविधि का विशेष संबंध विश्लेषण के यंत्रों से है। जिस सामग्री का विश्लेषण लेना है। वह सांख्यिकी या असांख्यिकी भी हो सकता है। अनुसंधान कार्य में किसी भी विषय से संबंधित सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए उपकरणों का प्रयोग प्रविधि के अंतर्गत रखा गया है। प्रविधि का विशेष संबंध विश्लेषक के यंत्रों से है।

उदाहरणतः– जब दो चरो के संबंधित माध्यमानों के अतंर की सार्थकता की जाँच परीक्षण द्वारा की जाती है, जब आँकडों की विधि न कहकर इसे प्रविधि कहना उपयुक्त है।

शोध प्रक्रिया

किसी भी शोधकार्य का महत्व इस तथ्य पर निर्भर करता है कि इस अध्ययन के निष्कर्षो का किसी सीमा तक व्यावहारिक प्रयोग हो सकेगा यह तभी संभव है जबकि अध्ययन के लिये शोधकर्ता द्वारा उपयुक्त विधि का चयन किया गया हो विधि की उपयुक्वता के अभाव में प्रदत्तों का संकलन विश्लेषण एवं निष्कर्ष न तो विश्वसनीय होगे और न ही उपयोगी होगे।

अनुसंधान विधि एक निश्चित व्यवस्था के आधार पर अध्ययन करने की प्रणाली है। साधारण शब्दों में इसे कार्य करने का व्यवस्थित ढंग कह सकते है यदि त्रुटिगत विधि का चयन कर लिया जाये तो शोध कार्य के विश्वसनीयता वैद्यता व उपयोगिता का ह्रास होता है। और शोध का कोई व्यावहारिक उपयोग नही रहता है। अत अनुसंधान हेतु अपने अध्ययन के लिये उपयुक्त विधि का चयन करना परमावश्यक है।

प्रत्येक शोधकार्य में विधि के साथ ही प्रदत्तों के संकलन हेतु प्रविधियॉ एवं उपकरणों का चयन अनिवार्य है किंतु शोधकार्य के सभी उपकरणो का चयन अनिवार्य है किंतु शोधकार्य में सभी उपकरण पूर्व में तैयार नही होते है। कोई शोधकार्य में उपकरणो का चयन एवं निर्माण दोनो ही महत्वपूर्ण हैं यदि एक भी त्रुटिपूर्ण हो गयी तो प्रदत्तों की विश्वसनीयता और वैद्यता संदिग्ध हो जायेगी और संपूर्ण अध्ययन आधारहीन हो जाएगा अतः उपकरणों का चयन एवं निर्माण शोधकार्य के लिये उतना ही महत्वपूर्ण है जितना की उपयुक्त शोधविधि का चयन इस दृष्टि से अध्ययन विधि –प्रविधि व उपकरण की शोधकार्य में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता में प्रयोग में लाई गई विधि उपकरणो एवं प्रविधि का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत अनुसंधान हेतु अनुसंधान या विधि का चयन :–

जैसे कि हम ऊपर चर्चा कर चुके हैं कि अनुसंधान कार्य को सम्पन्न करने हेतु उपयुक्त अनुसंधान उपागम का चयन करना होता है। अनुसंधान को सफल बनाने तथा अनुसंधान के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उपयुक्त उपागम का चयन करना अनुसंधानकर्ता का कर्तव्य होता है। अतः शोधकर्ता ने अपने अध्ययन की समस्या अशासकीय एवं शासकीय के प्राथमिक विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना है। प्रस्तुत समस्या को छिंदवाड़ा जिले के माध्यमिक का स्तर के अशासकीय और शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन से निहित है। अर्थात समस्या का समाधान वर्तमान परिस्थितियों में निहित है। अतः शोधकर्ता ने अपने वर्तमान अनुसंधान कार्य हेतु सर्वेक्षण उपागम का चयन किया है।

सर्वेक्षण विधि वर्तमान मूलक अनुसंधान उपागम है। जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि अनुसंधान का उद्‌देश्य वर्तमान में विद्यालय तथ्यों का अध्ययन स्थिति वर्णन एवं व्याख्या करना है, उसके लिए सर्वेक्षण विधि सर्वोपयोगी है। शैक्षणि समस्याओं में सर्वेक्षण उपागम सर्वाधिक व्यापक रूप से प्रयुक्त किया जाता है। इसका कार्य क्षेत्र प्रदत्तों के संग्रहीकरण, सारणीकरण, व्याख्या, तुलना, मापन, वर्गीकरण, मूल्याकंन तथा सामान्यीकरण करना भी है।

अनुसंधान सर्वेक्षण उपागम के लिए अनेक लेखकों ने अनेक नामों का प्रयोग किया है यथा आदर्श मूलक सर्वेक्षण, वर्णनात्मक सर्वेक्षण, प्रतिष्ठामूलक सर्वेक्षण टेण्ड सर्वेक्षण आदि बेस्ट का कथन है कि सामाजिक अनुसंधान में कुछ लेखकों ने इस वर्णनात्मक अनुसंधान कहा है किन्तु सभी प्रकार के अनुसंधानों में किसी न किसी सीमा तक वर्णन होता है अतः केवल इसी को वर्णनात्मक कहना संगत नहीं है। अन्य लेखकों में सर्वेक्षण अनुसंधान नाम दिया है परन्तु यह शब्द प्रायः वर्णनात्मक अध्ययन के लिए एक विशिष्ट प्रकार के संदर्भ में उपयोग में लाया जाता है। इसकी कोई सर्वमान्य शब्दावली नहीं है। अतः हम यहाँ इसका वर्णनात्मक अनुसंधान उपागममम या वर्णनात्मक सर्वेक्षण नाम ही उचित मानकर इसे वर्णनात्मक अनुसंधान उपागम के नाम से ही उयोग करेंगे।

वर्णनात्मक अनुसंधान उपागम की विशेषताएँ

1. इसके अन्तर्गत एक ही समय में बहुत सारे लोगों के बारे में आँकड़े प्राप्त किए जा सकते हैं।
2. इसकी प्रकृति क्रॉस सेक्शनल है। यह क्या है यह बताया है।

3. इसका संबंध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर पूरी जनसंख्या अथवा उसके न्यादर्श में होता है।
4. इसके अन्तर्गत स्पष्ट परिभाषित समस्या पर कार्य करते हैं।
5. इसका एक विशिष्ट उद्देश्य होता है।
6. इसके लिए विशिष्ट एवं कल्पनाएँ नियोजन आवश्यक होता है।
7. इसके आँकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण में सावधानी रखते हैं।
8. इसके अन्तर्गत किसी वैज्ञानिक नियम का निर्धारण नहीं करते अपितु समस्या के समाधान हेतु उपयोग सूचना प्रदान करते हैं।
9. वर्णनात्मक अनुसंधान विशेष, सरल एवं अत्यन्त कठिन दोनों प्रकार का हो सकता है।
10. वर्णन शाब्दिक भी हो सकता है तथा इसे गणितीय सूत्रों द्वारा भी व्यक्त कर सकते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान उपागम के चयन के कारण

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का तथा समायोजन तुलनात्मकता अध्ययन हैं। पूर्व में दी गई जॉन डब्ल्यू बेस्ट परिभाषा का अवलोकन करें तो हम पायेंगे कि वर्णनात्मक अनुसंधान का संबंध वर्तमान परिस्थितियों से हैं। इसमें क्या है का वर्णन एवं विश्लेषण किया जाता है अभ्यास जो चालू है विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पाई जा रही है प्रक्रियाएँ जो चल रही है। अनुभव जो किये जा रहे हैं अथवा नई दिशाएं जो विकसित हो रही है उन्हीं से इसका संबंध है। अतः प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान उपागम एक आदर्श उपागम है।
2. पूर्व में उल्लेखित वर्णनात्मक अनुसंधान उपागम के उद्देश्यों में से इस उपागम का एक उद्देश्य है मानव व्यवहार के विभिन्न पक्षों की जानकारी करना। इसमें सर्जनात्मकता चिन्तन क्षमता का अध्ययन किया जा रहा है। यह व्यवहार विभिन्न परीक्षणों के माध्यम से ज्ञात किये जा रहे हैं अतः शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान उपागम का चयन उचित ही है।
3. अनुसंधान उपागम किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित न होकर समूह से संबंधित होता है इस दृष्टि से भी प्रस्तुत अनुसंधान कार्य हेतु यह उपागम आदर्श है।
4. इस अनुसंधान उपागम का एक विशिष्ट उद्देश्य होता है। प्रस्तुत अध्ययन में अशासकीय एवं शासकीय के प्राथमिक विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता स्तर तथा समायोजन का का पता लगा कर तुलना करनी है। अतः इस दृष्टि से प्रस्तुत उपागम का चयन उचित ही है। उपयुक्त आधार पर हम पाते हैं कि प्रस्तुत अनुसंधान कार्य हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान उपागम ही सबसे उपर्युक्त एवं आदर्श उपागम है। अतः शोधकर्ता ने इस उपागम का चयन किया।

सर्वेक्षण विधि का कार्यक्षेत्रः

सर्वेक्षण में मुख्यतः हम तीन प्रकार की जानकारी प्राप्त करते हैं–

1. वर्तमान स्थिति के संबंध में जानकारी प्राप्त करना ।
2. अन्यत्र विद्यमान दशाओं के अध्ययन के द्वारा अथवा विशेषता किस प्रकार की स्थिति को वांछनीय समझते हे यह जानकारी लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का स्पष्टीकरण करके यह निर्धारित करना कि हम किस प्रकार की स्थिति को चाहते हे।
3. दूसरे व्यक्तियों के अनुभवों या विशेषज्ञो की राय के आधार पर लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये संबंधित साधनों की खोज करना।

न्यादर्शः

समस्या का क्षेत्र बहुत विस्तृत होने के कारण सभी परिस्थितियों में संपूर्ण क्षेत्र का अध्ययन किया जाना संभव नही है इसलिये अवधारणा के आधार कि बडे समाज में चयनित छोटा समूह संपूर्ण समाज का प्रतिनिधित्व करता है। न्यादर्श का चयन किया जाता है।

प्रतिदर्श के द्वारा अध्ययन निम्न चरणों में होता है–

01. पूर्व परीक्षण करना।
02. अध्ययन के उद्देश्यों को स्पष्ट करना।
03. समष्टि को स्पष्ट करना।
04. आवश्यक एवं सार्थक आँकड़ो का सकंलन करना।
05. परिणामों की आवश्यकता परिशुद्धता की मात्रा को पूर्व निर्धारित करना।
06. मापन की विधि की व्याख्या।
07. निर्देश सूची की रचना।
08. प्रतिचयन विधि का चयन।
09. अध्ययन क्षेत्र का सफल रूप से संगठन न करना।
10. आँकड़ो का सारांश तथा विश्लेषण।

न्यादर्श चयन की विधियाँ:

न्यादर्श चयन की प्रमुख्य विधियां निम्न है–
1) यावृच्छिक प्रतिचयन विधि
2) स्तरित प्रतिचयन विधि
3) युग्म प्रतिचयन विधि
4) आनुसंगिक प्रतिचयन विधि
न्यादर्श का चयन याद्रच्छिक विधी से किया गया है।

न्यादर्श का चयन

छिंदवाडा जिले के अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के 200 विद्यार्थी एवं शासकीय माध्यमिक विद्यालय के 200 विद्यार्थी का न्यादर्श का चयन याद्रच्छिक विधी से किया गया है।

छात्र इस तरह कुल मिलाकर 400 विद्यार्थियों का चयन किया है।

छिंदवाडा जिला

शासकीय	छात्र	100	कला	50
			विज्ञान	50
	छात्रायें	100	कला	50
			विज्ञान	50
अशासकीय	छात्र	100	कला	50
			विज्ञान	50
	छात्रायें	100	कला	50
			विज्ञान	50
कुल		400		400

शोध अध्ययन के चर :–

1. स्वतंत्र चर– छात्र– छात्रायें, परिवार का प्रकार, विद्यालय का प्रकार, माता–पिता का व्यवसाय, विषय का प्रकार
2. आश्रित चर– सर्जनात्मकता एवं समायोजन

शोध क्षेत्रः–

शोध कार्य हेतु संपूर्ण संबंधित क्षेत्र से प्रदत्तों का एकत्रीकरण संभव नही हो सकता है। साथ ही यह समय और व्यय साध्य होती है अतः समग्र के गुणो का प्रतिनिधित्व करने वाले न्यादर्शो को लेकर अध्ययन द्वारा

LBP PUBLICATION

समग्र का अध्ययन किया जा सकता है प्रस्तुत शोध कार्य बहुत विस्तृत है क्योकि हिन्दी माध्यम विद्यालय की बहुत सारी संस्थएँ है साथ ही अंग्रेजी माध्यम के भी अनेक विद्यालय संचालित हो रे है। साथ ही अनेक शासकीय एवं अशासकीय भी प्रमुखता से है। अतः सभी स्थानों पर जाकर प्रदत्तों का एकत्रीकरण असंभव था अतः न्यादर्श के रूप में छिंदवाडा जिले के अशासकीय एवं शा. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय को लिया गया है।

प्रदत्तों का संकलनः–

इस लघु शोध प्रबंध कार्य हेतु शिक्षण सत्र में फरवरी माह के दूसरे सप्ताह से प्रदत्तों के संकलन का कार्य शुरू किया गया। सर्वप्रथम संबंधित उपकरणों की प्रश्नावली एवं परीक्षणों की फोटोकॉपी के द्वारा साहित्य तैयार करवाया गया। यह कार्य प्रथम चरण में पूर्ण किया गया। दूसरे चरण मे रतलाम शहर के विद्यालयों में प्रदत्तों के संकलन का कार्य पूरा किया गया। इस प्रकार मार्च प्रथम सप्ताह तक प्रदत्तों के संकलन का कार्य शोधकर्ता द्वारा कर लिया गया।

शोधकर्त्ता ने अपने शोधकार्य में डॉ. बाकर मेहन्दी निर्मित प्रश्नावली को विद्यार्थियों के पास वर्णनात्मक रूप से प्रश्नावली भरवायी गयी है। उसमें वर्णन वाले प्रश्न है जिसके उत्तर से ही बालकों में कैसी सृजनात्मकता है उसका पता लगाना है। तथा समायोजन के द्वारा उनके संवेदना, सामाजिक तथा शैक्षिक समायोजन को ज्ञात किया गया है।

अशासकीय एवं शासकीय विद्यालय के कला एंव विज्ञान के विद्यार्थियों की शाब्दिक सर्जनात्मकता का अध्ययन

सबसे पहले हम अशासकीय एवं शासकीय विद्यालय के माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान विद्यार्थियों को चयनित सम्पूर्ण न्यादर्श 400 विद्यार्थी की सर्जनात्मकता के स्तर पर अध्ययन करेंगे।

Table

Level of creativity score of student of senior secondary school

creativity		Score range N=200	boy	%	girl
1	High creative	170 & bove	47	24%	43
2	Average (Cmoderately)	132 to 169	120	60%	133
3	Low creativity	131 & below	33	16.5	24
4	Total		200	100%	200

इस प्रकार छात्रों में 24: उच्च सृजनात्मकता तथा 60: औसत तथा 16.5 निम्न सृजनात्मक छात्र पाये गये तथा छात्राओं में 21.57: उच्च सृजनात्मकता तथा 66.5: औसत तथा 12: निम्न सृजनात्मकता वाली छात्राए पाई गई । इसी प्रकार कुल छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के तीन वर्गीकरण किये गए है

Table

Lavel of Adjustment of secondary school student

S.N	Adjustment	Male	Female	Boys N=200	%	Girls N=200	%
1	Excellent	58bdows	& below	X		X	
2	Good	6-14	6-14	33	16.5	50	25
3	Average	15-22	15-22	125	62.5	110	55
4	Unsatisfactory	22-30	23-31	31	15.5	32	16
5	Very Unsatisfactory	31 & above	32 & above	11	5.5	8	4
6	Total			200	100%	200	100%

सारणी में स्पष्ट है कि कुल छात्रों में 16.50: छात्रों का अच्छा समायोजन प्राप्त हुआ है। तथा 62.5 औसत तथा 15.5 असंतुष्ट समायोजन प्राप्त हुआ है।

इसी प्रकार कुल छात्राओं में 25: अच्छा समायोजन प्राप्त हुआ है तथा 55: औसत तथा 16' असंतुष्ट तथा 4: बहुत ही असंतुष्ट समायोजन पाया गया है। तथा सभी प्रदत्तों को साख्यिकी मध्यमान मानक विचलन ज के द्वारा विश्लेषित कर परिणाम व निष्कर्ष प्राप्त किये गये है।

परिकल्पना –1 कला संकाय के छात्र एंव छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका –1 कला संकाय के छात्र एंव छात्राओं की सृजनात्मकता ज मान का विश्लेषण

creativity	Arts boy N=100		Arts Girl N=100				Signif acant
Componant	M	SD	M	SD	SEd	t	Level .05
Fluency	49.77	9.34	50.26	9.94	1.39	.360	N.S
Flexibility	54.90	12.30	52.72	11.77	1.72	1.26	N.S
Originality	51.23	9.77	50.77	10.22	1.41	.326	N.S
Total Creativity	155.92	20.09	153.76	18.26	2.71	.995	N.S

df-198 105=1.97

निष्कर्ष :–

इन्होंने ग्रुप गृह विज्ञान कला गृह विज्ञान के विद्यार्थियों के बीच सर्जनात्मकता पर कार्य किया। अध्ययन के उद्देश्य दोनों समूहों की बुद्धि और सर्जनात्मकता का पता करना, दोनों में संबंध एवं तुलना करना था। निष्कर्ष यह रहा कि सर्जनात्मकता के दोनों समूहों में अन्तर नहीं आया। बुद्धि समान स्तर की है। सर्जनात्मकता व मानसिक योग्यता में कोई संबंध नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography)

1. सरीन शशिकला एवं सरीन अंजनी (1995) शैक्षिक अनुसंधान विधियॉ नवीनतम् संस्करण आगरा विनोंद पुस्तक मंदिर 435 पेज
2. शर्मा आर.ए. (1995) शिक्षा अनुसंधान नवीन संस्करण मेरठ आर लाल बुक डिपो 558 पेज
3. सिंह रामपाल एवं शर्मा ओ.पी. (2004) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी नवीनतम् संस्करण आगरा विनोंद पुस्तक मंदिर 616 पेज
4. सिन्हा ए.के.पी. एवं सिंह आर.पी. स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची का मैनुअल आगरा, नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन
5. सुखिया, एस.पी. (1971) शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व प्रथम संस्करण आगरा विनोद पुस्त मंदिर
6. टारेंस खातीना सृजनात्मक प्रत्यक्षीकरण अनुसूची (हिन्दी अनुवाद–डॉ अहलूवालिया, एस.पी.) आगरा नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन

LBP PUBLICATION